www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनसम्पर्क, जन जागरण की पंच सूत्री योजना

—ब्रह्मवर्चस्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन-जागरण की पंचसूत्री योजना

ध्वंस सरल है निर्माण कठिन। एक माचिस सारे गांव को भस्म कर सकती है। एक बम किसी बड़े इलाके को विनष्ट करने के लिये पर्याप्त है। किन्तु उतना निर्माण करना हो तो ढेरों समय, कौशल, श्रम और धन लगाना पड़ेगा। संसार को दुर्दशाग्रस्त बनाने में प्रचुर बुद्धिबल, धनबल और समय लगा है। युग परिवर्तन एवं अभिनव सृजन के लिये उससे अधिक मात्रा में प्रतिभा और सम्पदा नियोजित करनी पड़ेगी। युग निर्माण तभी सम्भव और सरल हो सकता है जब उपयुक्त मात्रा में श्रेष्ठजनों का सहयोग अनुदान उपलब्ध हो।

इस प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये घर-घर अलख जगाने और जन-जन से सम्पर्क साधने की आवश्यकता पड़ेगी। तभी गहरे पानी में डुबकी लगाकर मोती ढूंढने जैसा वह कठिन काम सम्पन्न करना होगा जिसके अनुसार भावनाशील, विचारशील उदार जनों में समय की मांग समझाई और गले उतारी जा सके। समर्थन और सहयोग तो इतना बन पड़ने के बाद ही मिल सकता है। विचारक्रान्ति अभियान की प्रवृत्तियों गतिविधियों को व्यापक एवं सफल बनाने के लिये-इतना जुटाये बिना गाड़ी एक इंच आगे बढ़ने वाली नहीं है। अस्तु युग परिवर्तन का प्रथम कार्यक्रम सज्जनों का सहयोग अर्जित करना है।

इस खोजबीन को सुविस्तृत क्षेत्र में गतिशील करने के लिये जन-सम्पर्क की जन-जागरण की पंचसूत्री योजना बनी है। यह कार्य जहां पैर जमाकर आगे बढ़ाया जा सकता है उन स्थाई केन्द्रों की सशक्तता के लिये प्रज्ञापीठों और प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना हुई है। शिक्षा विस्तार के लिए स्कूल, स्वास्थ्य संरक्षण के लिए अस्पताल, उत्पादन के लिए कारखाना, योजना के कार्यान्वयन के लिए दफ्तर बनाने पड़ते हैं। सैन्य सज्जा के लिए छावनी और धर्म प्रचार के लिए देवालय बनाने की आवश्यकता पड़तीहै।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युगचेतना के उत्पादन एवं वितरण के लिए इन्हीं दिनों छोटे-बड़े सहस्रों प्रज्ञा संस्थान बने हैं और गतिशील हुये हैं। इन सभी की इमारत बनाकर या माँगे की इमारत का प्रबन्ध करते ही इस काम में जुटा दिया गया है कि जन-जागरण के लिए घर-घर अलख जगाने और जन-जन से सम्पर्क साधने में सर्वतोभावेन जुट पड़ें ताकि यह खोजा जा सके कि भावनाशील परमार्थ परायणों के मणि मुक्तक कहाँ-कहाँ विद्यमान हैं और उन्हें किन उपायों मे नवयुग सृजन की युग पुकार में सहयोगी बनाने के लिए सहमत किया जा सकता है।

युग सृजन बड़ा काम है। उसमें ५०० करोड़ मनुष्यों के दृष्टि-कोण, स्वभाव, अभ्यास, व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की आवश्यकता पूरी करनी होगी। समाजगत प्रचलनों का उलटापन उलटकर सीधा करना होगा। इतना बड़ा कार्य चुटकी बजाते होने वाला नहीं है। उसमें लंका दहन और राम राज्य स्थापना, अनाचारों का उन्मूलन और महाभारत आयोजन, भ्रान्तियों और विकृतियों से जूझने वाले धर्मचक्र प्रवर्तन, स्वतन्त्रता संग्राम के सत्याग्रह आन्दोलन से भी बड़े कदम उठाने पड़ेंगे। वे कार्य क्षेत्रीय, सामयिक एवं सीमित लोगों से सम्बन्धित थे। युग सृजन में हर मनुष्य को झकझोरना और बदलना पड़ेगा। गिराने को तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति ही बहुत है पर उठाने-उछालने के लिए भारी शक्ति संजोनी पड़ती है। तमिस्रा निवारण और प्रकाश का आगमन दैवी होते हुये भी उस प्रभात बेला में मनुष्यों को भी स्वच्छता से लेकर कार्यरत होने की तत्परता बरतनी पड़ती है। मूर्धन्यों को इस युग सन्धि बेला में इसी प्रकार अपनी हलचलें तीव्र करनी होंगी। रीछ, वानरों, ग्वाल-बालों, बौद्ध परिव्राजकों, सत्याग्रहियों की तरह युग सृजेताओं का बहुत बड़ा समुदाय खड़ा करना समय की सबसे बड़ी मांग को पूरा करना है। तत्काल क्या किया जाना है? इसका उद्देश्य समझ लेने के उपरान्त प्रत्येक विचारशील को सर्वप्रथम एक ही काम में जुटना है— सत्यप्रयोजनों के लिए व्यापक सम्पर्क।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही पंचसूत्री कार्यक्रम को सर्वप्रथम हाथ में लिया गया है और प्रत्येक छोटे-बड़े प्रज्ञा संस्थान से, प्रत्येक सृजन शिल्पी-प्रज्ञा परिजन से आग्रहपूर्वक यह अनुरोध किया गया है कि वे अपना ध्यान और प्रयास बिखेरे नहीं उसी प्रथम चरण की पूर्ति में जुटें ताकि शुभारम्भ के उपरान्त एक-एक कदम आगे बढ़ाते हुये मंजिल तक पहुँच सकना सम्भव हो सके। इसके लिये पंचसूत्री योजना से बढ़कर सरल एवं प्रभावी कार्यक्रम और कोई बन नहीं सकता था।

पंचसूत्री कार्यक्रम इस प्रकार है। (१) शिक्षितों को प्रज्ञा साहित्य नियमित रूप से पढ़ाने का स्वाध्याय विस्तार, (२) युग चेतना का आलोक घर-घर पहुंचाने का सत्संग आयोजन, (३) परिवारों में छोटे-छोटे आयोजन सम्पन्न करके उनमें सुसंस्कारिता और प्रगतिशीलता का अभिवर्द्धन, (४) आदर्श वाक्यों से घरों और दीवारों को सजाकर समय परिवर्तन का अचेतन लोक शिक्षण, (५) सृजन शिल्पियों का अधिकाधिक संख्या में उत्पादन, संगठन एवं उनके निर्वाह का उपक्रम।

इन पाँचों को कार्यान्वित करने के लिए क्या किया जाना है उसका विस्तृत विवरण इस प्रकार समझा जाना चाहिए।

(१) वर्तमान युगशिल्पी अपने अपने क्षेत्र में शिक्षितों की संख्या नोट करें। उनमें से जो अध्ययनशील, विचारशील प्रवृत्ति के दीखें उनके साथ सम्पर्क साधें, इसके लिए प्रज्ञा साहित्य हर दिन नियमित रूप से बिना मूल्य उनके यहाँ पहुंचाने वापस लेने की योजना बनायें। इसके लिए नियमित समय लगाया जाय। जहाँ सम्भव हो चल पुस्तकालय के रूप में धकेल गाड़ी-ज्ञानरथ चलाया जाय। कहना न होगा कि इस प्रयोजन के लिए जो प्रज्ञा साहित्य विनिर्मित हुआ है वह सस्तेपन तथा युग समस्याओं का स्वरूप और समाधान प्रस्तुत करने की दृष्टि से अनुपम है। जो पढ़ेगा प्रभावित हुये बिना रहेगा नहीं। जो पढ़ें उनसे कहा जाय कि वे अपने घर परिवार तथा सम्पर्क के अनपढ़ों को पढ़ करके सुनाया भी करें। यह स्वाध्याय अभियान हुआ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) लोक शिक्षण का दूसरा चरण है सत्संग। इसके लिए कुछ उपकरण बड़े आकर्षक एवं सफल हुये हैं। यों इन दिनों आदर्शवादी परामर्श सत्संग में लोकरुचि रही नहीं है पर इन उपकरणों के माध्यम से लोक रंजन और लोक मंगल का उभयपक्षीय प्रयोजन समन्वित रूप से बन पड़ते हैं और सत्संग में उपस्थिति भी अच्छी होती है तथा उद्देश्य की पूर्ति में सफलता भी बहुत मिलती है।

इस संदर्भ में प्रकाश चित्र प्रदर्शन हेतु स्लाइड प्रोजेक्टर बहुत प्रभावी सिद्ध हो रहा है। मुहल्ले-गाँवों में उसे देखने के लिये बाल, वृद्ध, नर नारी सभी उमड़ पड़ते हैं और मुफ्त का सिनेमा पड़ोस में देखने का लाभ लेने में चूकते नहीं हैं। प्रदर्शन के साथ-साथ व्याख्या विवेचन का आकर्षक लोक शिक्षण चलता रहता है। उपस्थित समुदाय को बहुत कुछ जानने को मिलता है जो इन्हीं दिनों जनाया जाना आवश्यक है।

इसी प्रकार का दूसरा उपकरण टेप रिकार्डर है। इस साधन से घर-घर युग संदेश सुनाया जाता है। प्राणवान युग संगीत के कितने ही टेप हैं। इसके अतिरिक्त अभियान के संचालक ने इन्हीं दिनों बड़े मार्मिक प्रवचन टेप कराये हैं। इन्हें सुनने के लिये वही उत्सुकता पैदा की जा सकती है और सुनने वालों की अच्छी उपस्थिति रह सकती है।

इन दोनों उपकरणों के साथ लाउड स्पीकर का सुयोग भी बन सके तो उपरोक्त दोनों उपकरणों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले प्रतिपादन से अधिक बड़ी जनसंख्या लाभ उठा सकती है। स्लाइड प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर लाउडस्पीकर के अतिरिक्त स्थानीय गायकों के द्वारा जहाँ तहाँ संगीत आयोजन भी कराये जाते रहें तो उनके लिए संगीत-उपकरणों की भी आवश्यकता पड़ेगी। उपरोक्त सभी साधन तीन हजार रुपये के भीतर ही बन जाते हैं।

सभी स्तर के प्रज्ञा संस्थानों को अपने यहाँ यह उपकरण खरीदने के लिए उपरोक्त राशि की व्यवस्था करनी चाहिए। जहाँ इतना बन पड़ेगा वहाँ मुहल्ले-मुहल्ले प्रभावी सत्संग-प्रचलन करने में तनिक भी कठिनाई न पड़ेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चल पुस्तकालय का ज्ञान रथ और बना लिया जाय तो उससे घर-घर पुस्तकें पढ़ाने के अतिरिक्त साहित्य विक्रय का क्रम भी चल सकता है और उसके लाभांश से कार्यकर्त्ता निर्वाह की आवश्यक पूर्ति भी होती रह सकती है। ज्ञान रथ को खड़ा करने में अतिरिक्त रूप से एक हजार की पूंजी लग जाती है।

(३) जन्म दिवसोत्सव-संस्कार आदि मिशन के प्रत्येक कर्मठ कार्यकर्त्ता का उनके घरों पर मनाया जाना चाहिए। छोटे यज्ञ-अनुष्ठान प्रवचन आदि के सहारे यह आयोजन बड़े ही प्रभावी सिद्ध होते हैं। मित्र पड़ोसियों को सूचना देने पर वे खुशी-खुशी एकत्रित होते हैं। जिसका जन्म दिन मनाया जाना है उसे उस दिन का 'हीरो' बनने का अवसर मिलता है, अभिवन्दन, आशीर्वाद पुष्पवर्षा से, यज्ञ व्याख्या तथा प्रवचन से जो उत्साह मिलता है उसे जीवन निखारने के लिए मोड़ा जा सकता है। इससे आत्म-निर्माण की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। जिसका जन्म दिन है उसे एक बुराई छोड़ने और एक अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प भी करना होता है। इस प्रकार आत्म सुधार का यह आयोजन अच्छा आधार भी बन जाता है। परिवार गोष्ठी के रूप में इन आयोजनों का असाधारण उपयोग है। घर में धार्मिकता प्रगतिशीलता एवं सुसंस्कारिता का वातावरण बनता है। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से उसी की प्रेरणायें इन आयोजनों में भी भरी रहती है।

जन्म दिवसोत्सवों को नितान्त सस्ता रखा गया है। आतिथ्य के लिए सौंफ सुपाड़ी से अधिक कुछ भी अधिक खर्च करने पर प्रतिबन्ध इस लिये लगाया गया है ताकि धनी निर्धन सभी के घरों में यह प्रचलन समान उत्साह के साथ चल पड़े। दो घण्टे में समूचा कार्यक्रम सम्पन्न होता है। सामूहिक गायत्री पाठ, देव पूजन, संक्षिप्त अग्निहोत्र, आशीर्वाद, अभिनन्दन, आत्म सुधार के लिए कुछ अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प और जितनी आयु हो उतने दीप दान। संक्षेप में यही कार्यक्रम हैं जिसमें हवन तथा आतिथ्य में दो तीन रुपये से अधिक खर्च नहीं पड़ता है। उपस्थित सभी सम्बन्धी पड़ोसी नई प्रेरणा-विचारणा लेकर लौटते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(४) दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन स्याही-ब्रुस से भी हो सकता है और साधारण खड़िया या गेरू की डली से भी यह कार्य किया जा सकता है। आदर्श वाक्यों की एक शृंखला पहले से ही निर्धारित है जिसे सड़क गलियों में दीवारों पर आसानी से लिखा जा सकता है और उधर से निकलने वालों को बोलती दीवारों का लाभ दिया जा सकता है। घरों-कमरों को चित्रों-कलेण्डरों की तरह आदर्श वाक्यों से सजाने की बात भी ऐसी ही प्रेरणाप्रद है। इसके लिए सस्ते और आकर्षक आदर्श वाक्य मिशन की ओर प्रकाशित किये गये हैं। वे सस्ते भी हैं, अमूल्य भी और पढ़ने वालों के दिलों में हलचल मचाने वाले भी। इस पोस्टर प्रदर्शन का कितना प्रभाव होता है इसे सिनेमा वालों, औषधि विक्रेताओं और दूसरे व्यवसाइयों से पूछकर जाना जा सकता है कि दीवारें रंगने की प्रक्रिया उन्हे कितनी अधिक लाभदायक सिद्ध हुई। प्रज्ञा मिशन की विचार क्रान्ति योजना में भी आदर्श वाक्यों के प्रचलन को आवश्यक और उपयोगी समझकर क्रियान्वयन में पूरा उत्साह बरतना चाहिए।

(५) प्रारम्भिक और अतिआवश्यक बात यह है कि उपरोक्त सभी कार्य क्रियान्वित कैसे हों? इसका उत्तर है कार्यकर्त्ताओं का समय नियोजन। प्रज्ञा परिवार के प्रत्येक परिजन को एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य देने का नियम था। अब उसे युगसंधि की महती आवश्यकता को देखते हुये दुगना कर दिया गया है। दो घण्टा समय और बीस पैसा नित्य भी यदि कर्मठ युगशिल्पी लगाने से आनाकानी करेंगे तो फिर हनुमान अंगद, भीम, अर्जुन, बुद्ध, अशोक, गाँधी, विनोवा जैसा भारी उत्तरदायित्व किस बलबूते उठाया जा सकेगा?

भारतीय संस्कृति की रीढ़ वानप्रस्थ परम्परा है। यही प्रचलन इस देश में भावभरे सुयोग्य लोकसेवी उत्पन्न करता रहा है। उस उपेक्षित परम्परा को अब पुनः जीवित करना चाहिए। प्रज्ञा परिजनों में से जिनकी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ हलकी हुई हों वे अधिकाधिक समय युगधर्म की सबसे बड़ी माँग नव सृजन को पूरी करने के लिए लगाने की बात सोचें और अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जहाँ बन पड़े न्यूनतम एक कार्यकर्त्ता पूरे या आधे समय का नियुक्त करने के लिए वैतनिक रूप से रखने की भी सोचें। नियमित कार्यक्रम उसी के सहारे चल सकते हैं। स्वाध्याय-सत्संग और सम्मेलन की तीनों ही प्रमुख गतिविधियों को अग्रसर करने के लिये झोला पुस्तकालय चलाया जाय। स्लाइड प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर, जन्मदिवसोत्सव-यह तीन कार्यक्रम नित्य नियमित रूप से चलाने होते हैं। इनके लिए एक उपयुक्त व्यक्ति तलाश किया जाय। रिटायर वर्ग में से। खाली लोगों में से जो भावनाशील, परिश्रमी और मुखर हों ढूंढने पर स्वल्प पारिश्रमिक में भी, सेवा धर्म की महत्ता को स्वीकारने वाले उपलब्ध हो सकते हैं।

ज्ञानघटों के पैसे, महिलाओं के धर्मघटों का अन्न, मासिक अंशदान, पुस्तक विक्रय का लाभांश आदि से मिला जुला कर ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि न्यूनतम एक व्यक्ति का निर्वाह व्यय निकलता रहे। यों जन्म दिवसोत्सवों पर दक्षिणा रूप में एक-एक ज्ञानघट स्थापित करते चलने की चेष्टा की जाती रहे तो उससे भी अधिकांश स्थानों पर वह स्थापना होती रहेगी। जो हो, प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान को एक स्थायी कार्यकर्त्ता की नियुक्ति का प्रयत्न करना चाहिए। जहाँ प्रज्ञा पीठें हैं वहाँ दो की आवश्यकता पड़ेगी एक समीपवर्ती क्षेत्र के सात विभाग करके हर दिन एक एक क्षेत्र में उपरोक्त पंचसूत्री योजना चलाने के लिये और एक स्थानीय गतिविधियाँ चलाने के लिये, दोनों समय पूजा आरती-रात्रि की प्रज्ञा पुराण कथा, दिन में प्रौढ़ों, महिलाओं एवं बालकों की दो-दो घण्टे की पाठशालायें, व्यायामशाला एवं जड़ी बूटी उद्यान का संचालन, पुस्तकालय आदि की व्यस्त गतिविधियाँ हर प्रज्ञा-पीठ में चलनी चाहिये। इसके बिना वे मनोकामना के लिए देवी की पूजापत्री चलाते रहने वाले प्रचलित मन्दिरों जैसे ढकोसले बनकर रह जायेंगे। वे स्थापना का वह उच्चस्तरीय प्रयोजन पूरा न कर सकेंगे जिसमें उन्हें चर्चों की तुलना में अपने क्षेत्र में प्राण प्रेरणा-बिखेरने का काम परिपूर्ण तत्परता के साथ करना है।

प्रका० मुद्रक:- युगान्तरचेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य:- ३५ पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org